17 अक्टूबर 2011, कुल पृष्ठ : 8, मूल्य : 2/- आर. एन. आई. 31109/77 RJ / J. P. C / FN-61 / 2009-11

जैन
पथप्रदर्शक

ए-4, बापूनगर, जयपुर - 302015 (राज.)

नैतिक एवं सामाजिक चेतना का अग्रदूत निष्पक्ष पाक्षिक

डॉ. हुकमचन्दजी भारिल्ल के व्याख्यान देखिये

जी-जागरण पर

प्रतिदिन प्रातः 6.40 से 7.00 बजे तक

वर्ष : 34, अंक : 13 सम्पादक : **पण्डित रतनचन्द भारिल्ल** आजीवन शुल्क : 251 रुपये

अक्टूबर (द्वितीय), 2011 (वीर नि. संवत्-2537) सह-सम्पादक : **पण्डित संजीवकुमार गोधा** वार्षिक शुल्क : 25 रुपये

चौदहवाँ आध्यात्मिक शिक्षण-शिविर सानन्द सम्पन्न

जयपुर (राज.) : पण्डित टोडरमल सर्वोदय ट्रस्ट द्वारा ज्ञानतीर्थ श्री टोडरमल स्मारक भवन में दिनांक 2 से 11 अक्टूबर 2011 तक आयोजित चौदहवें आध्यात्मिक शिक्षण-शिविर का उद्घाटन श्री ताराचंदजी सोगानी परिवार जयपुर के करकमलों से हुआ।

उद्घाटन सभा के पूर्व ध्वजारोहण श्री निहालचन्दजी घेवरचन्दजी जैन जयपुर ने, प्रवचन मण्डप का उद्घाटन श्री टीकमचंदजी पल्लीवाल, वैशाली नगर, जयपुर ने किया।

मुख्य प्रवचन – शिविर में प्रतिदिन ख्यातिप्राप्त तार्किक विद्वान डॉ. हुकमचंदजी भारिल्ल के समयसार ग्रंथाधिराज के आस्रव अधिकार पर मार्मिक प्रवचन हुये। डॉ. भारिल्ल के प्रवचनों के पूर्व प्रथम प्रवचनों में पण्डित रतनचंदजी भारिल्ल, ब्र. सुमतप्रकाशजी खनियांधाना, पण्डित शैलेषभाई शाह तलोद, पण्डित राजकुमारजी शास्त्री बांसवाड़ा, पण्डित संजयजी शास्त्री मंगलायतन, पण्डित शान्तिकुमारजी पाटील जयपुर आदि विद्वानों के प्रवचनों का लाभ मिला।

गुरुदेवश्री कानजीस्वामी के सी.डी. प्रवचन एवं प्रश्नोत्तर के पश्चात् रात्रिकालीन प्रवचनों में प्रतिदिन ब्र.सुमतप्रकाशजी खनियांधाना के प्रवचनों के पूर्व पण्डित अभयकुमारजी शास्त्री देवलाली, डॉ. नरेन्द्रजी शास्त्री जयपुर, डॉ. वीरसागरजी शास्त्री दिल्ली, पण्डित वीरेन्द्रकुमारजी आगरा, पण्डित अनेकान्तजी भारिल्ल मुम्बई, पण्डित विरागजी शास्त्री देवलाली एवं अध्यात्मप्रकाशजी भारिल्ल मुम्बई के व्याख्यानों का लाभ मिला।

शिक्षण कक्षायें – षट्कारक पर पण्डित रतनचंदजी भारिल्ल द्वारा, गुणस्थान विवेचन पर ब्र. यशपालजी जैन द्वारा, नयचक्र (द्रव्यार्थिक नय भेद-प्रभेद) पर पण्डित अभयकुमारजी शास्त्री देवलाली द्वारा, समयसार (कर्त्ताकर्माधिकार) पर पण्डित वीरेन्द्रकुमारजी आगरा द्वारा, तत्त्वार्थसूत्र पर पण्डित शांतिकुमारजी पाटील द्वारा, नयचक्र (द्रव्यार्थिक-पर्यायार्थिक) पर पण्डित संजीवकुमारजी गोधा द्वारा एवं क्रमबद्धपर्याय पर डॉ. मनीषजी शास्त्री, खतौली द्वारा कक्षायें ली गईं।

प्रौढ कक्षा (प्रातः 5.45 से 6.30 तक) – इसमें पण्डित पूनमचंदजी छाबड़ा, इन्दौर, पण्डित कमलकुमारजी पिड़ावा के व्याख्यानों का लाभ मिला। इसके तत्काल बाद 6.40 से 7.00 बजे तक साधना चैनल पर प्रतिदिन प्रसारित होने वाले डॉ. भारिल्ल के प्रवचन का प्रसारण प्रवचन हॉल में ही बड़े पर्दे पर किया जाता था।

दोपहर में बाबू युगलजी के सी. डी. प्रवचन के पश्चात् महाविद्यालय के छात्र विद्वानों द्वारा प्रवचन हुये। तत्पश्चात् व्याख्यानमाला के अन्तर्गत पण्डित गणतंत्रजी शास्त्री 'ओजस्वी' आगरा, पण्डित निलयजी शास्त्री आगरा, पण्डित शिखरचंदजी शास्त्री सागर, पण्डित कमलचंदजी पिड़ावा, पण्डित आशीषजी शास्त्री टीकमगढ, डॉ. नेमचंदजी शास्त्री खतौली, पण्डित सुरेन्द्रकुमारजी उज्जैन, पण्डित तपिशजी शास्त्री उदयपुर, पण्डित विवेकजी शास्त्री सागर आदि विशिष्ट विद्वानों के प्रवचनों का लाभ मिला।

विशिष्ट कार्यक्रम – श्री टोडरमल स्नातक परिषद् का उत्तरप्रांतीय अधिवेशन दिनाँक 4 अक्टूबर को रखा गया। दिनाँक 6 अक्टूबर को श्री टोडरमल स्मारक भवन में होने वाले श्री आदिनाथ पंचकल्याणक प्रतिष्ठा महोत्सव के पात्रों का अभिनन्दन समारोह का आयोजन किया गया।

शिविर में प्रथम बार श्री टोडरमल महाविद्यालय में अध्ययनरत छात्रों के अभिभावकों की मीटिंग दिनांक 5 अक्टूबर को रखी गई, जिसमें छात्रों के अभिभावकों ने महाविद्यालय के अध्यापकों के साथ मिलकर अपने बालकों की प्रगति की जानकारी ली।

सायंकालीन बालकक्षा पण्डित अशोकजी जैन बकस्वाहा, पण्डित पंकजजी जैन बकस्वाहा, पण्डित साकेत जैन जयपुर तथा श्रीमती वन्दना जैन जयपुर द्वारा ली गई।

शिविर के आमंत्रणकर्त्ता श्रीमती रतनबाई ध.प. स्व. श्री राजमलजी पाटनी की स्मृति में सुपुत्र श्री अशोककुमारजी पाटनी परिवार कोलकाता, श्री

(शेष पृष्ठ 4 पर...)

प्रतिष्ठेय प्रतिमाओं की अगवानी सानंद संपन्न

श्री टोडरमल स्मारक भवन में विराजमान होने वाले जो दिगबर जिनबिम्ब तैयार होकर आ गये हैं, उनकी शिक्षण शिविर के दौरान 6 अक्टूबर को अगवानी की गई।

इस अवसर पर उनकी भव्य शोभा यात्रा निकाली गई जो बापूनगर के विभिन्न मार्गों से होती हुई स्मारक भवन पहुँची।

इस शोभायात्रा में सीमन्धर भगवान को श्री प्रकाशचंदजी गम्भीरमलजी जैन अहमदाबाद, युगमन्धर भगवान को डॉ. अरविन्दजी दोशी गोंडल, बाहु भगवान को श्री मणिभाई मयंकभाई ठगन टीकमगढ, सुबाहु भगवान को श्री सुरेशचंदजी जैन शिवपुरी सजे हुए रथ में लेकर चल रहे थे। इस शोभायात्रा में 21 इंच की स्फटिक रत्न की प्रतिमा श्री मुकेशजी जैन इन्दौर लेकर चल रहे थे। संभवतः अभी तक ज्ञात स्फटिक रत्न की दि. प्रतिमा में सबसे बड़ी 21 इंच की पद्मासन प्रतिमा श्री टोडरमल स्मारक भवन में विराजमान होगी।

इस अद्भुत भव्य प्रतिमा की अगवानी कर प्रवचन हॉल में लेकर आने का सौभाग्य श्री सुरेशचंद शशि जैन परिवार शिवपुरी को प्राप्त हुआ।

सम्पादकीय – 66

पंचास्तिकाय : अनुशीलन

– पण्डित रतनचन्द भारिल्ल

गाथा– १०४

विगत गाथा में पंचास्तिकाय के ज्ञान का फल कहकर पंचास्तिकाय की व्याख्या का उपसंहार किया गया है।

अब प्रस्तुत गाथा में दुःख से मुक्त होने का कथन करते हैं।

मूल गाथा इसप्रकार है –

मुणिऊण एतदट्ठं तदगमणुज्जदो णिहदमोहो।
पसमिय रागद्दोसो हवदि हद परापरो जीवो।।१०४।।

(हरिगीत)

इस भाँति जिनध्वनिरूप पंचास्ति प्रयोजन जानकर।
जो जीव छोड़े राग–रुष वह छूटता भव दुःख से।।१०३।।

जीव इस शास्त्र के अर्थभूत शुद्ध आत्मा को जानकर उसके अनुसरण का उद्यम करता हुआ हतमोह होकर अर्थात् दर्शन मोह का क्षय करके तथा राग–द्वेष को प्रशमित करके उत्तर और पूर्व बन्ध का नाश करता है।

आचार्य अमृतचन्द्र टीका में कहते हैं कि प्रथम, कोई इस शास्त्र के अर्थभूत शुद्ध चैतन्य स्वभाववाले निज आत्मा को जानता है; फिर उसी के अनुसरण का उद्यम करता है; इसलिए उसे दृष्टि मोह का क्षय होता है। तथा स्वरूप के परिचय से ज्ञानज्योति प्रगट होती है, इससे राग–द्वेष प्रशमित होते हैं। इससे उत्तर और पूर्व अर्थात् बाद का और पहले का बन्ध नष्ट होता है तथा पुनः बंध होने के हेतु का अभाव होने से वह जीव सदा स्वरूप स्थित रहकर परमानन्द ज्ञानादि रूप परिणमित होता है।

इसी बात को कवि हीरानन्दजी काव्य में कहते हैं –

(सवैया इकतीसा)

याही ग्रन्थविषैं अर्थ जीव चेतना–सुभाव,
ताकै जानिवे का कोऊ उद्यम धरतु है।
तब ही तैं दृष्टि मोह छीन होता जाइ ताका,
निज रूप जानै ग्यान ज्योति उछरतु है।।
राग–दोष सान्त होइ पूरब निबंध खोई,
नवा बंध का अभाव ग्यान निवरतु है।
आप विषैं लीन होइ पर का वियोग जोइ,
सुद्ध चेतना–स्वभाव आप में भरतु है।।४४७।।

उक्त सवैया में कवि कहते हैं कि – इस ग्रन्थ में वर्णित जिसने जब शुद्धात्मा के स्वरूप को जानने का उद्यम किया है, उसने तभी दर्शनमोह का अभाव करने निज स्वरूप को जानकर ज्ञान की ज्योति को प्रगट की है। राग–द्वेष का अभाव करके पूर्व में बाँधे कर्मों का नाश करके तथा नवीन कर्म बंध का अभाव करके सम्यग्ज्ञान प्रगट किया है, वही शुद्ध चेतना के स्वभाव को प्राप्त करता है।

इस गाथा पर प्रवचन करते हुए गुरुदेवश्री कानजीस्वामी कहते हैं कि – जिन्होंने इस ग्रन्थ के रहस्य रूप जो शुद्धात्म पदार्थ को जानकर उसी में प्रवीण होने का उद्यम किया है, वे भेदविज्ञानी जीव मोक्षपद के अनुभवी होते हैं।

जिन्होंने दर्शन मोह का नाश किया है तथा पूर्वापर बंध का अभाव किया है, वे जीव मोक्ष के अधिकारी होते हैं, शुद्धात्मा की ओर उनका झुकाव हो जाता है।

यहाँ तक प्रथम श्रुतस्कन्ध समाप्त हुआ। इसमें छहद्रव्यों की स्वतंत्रता बताई है।

अब आगे नवपदार्थों का भेद से कथन करेंगे। उसमें सर्व प्रथम सर्वज्ञ भगवान की स्तुति की है। वे केवली भगवान सर्वज्ञ वीतराग हैं, इसकारण उनके वचन प्रामाणिक होते हैं। वीतराग सर्वज्ञ के सिवाय अन्य मतवालों के वचन प्रामाणिक नहीं होते। इसी कारण कुन्दकुन्दाचार्य ने सर्वज्ञ भगवान की स्तुति है तथा उन्हीं की दिव्यध्वनि के अनुसार ग्रन्थ की रचना की है। ●

गाथा– १०५

विगत गाथा में दुःख से मुक्त होने के क्रम का कथन करते हुए छह द्रव्य के प्रकरण को पूरा किया।

अब गाथा १०५ के पहले आचार्य श्री अमृतचन्द्र स्वामी ने जो प्रथम स्कन्ध में कहा है तथा द्वितीय स्कन्ध में कहने जा रहे हैं, यहाँ उसका संक्षेप में उल्लेख करते हैं। मूल कलश इस प्रकार है –

द्रव्य स्वरूप प्रतिपादनेन, शुद्धं बुधानामिह तत्त्व मुक्तम्।
पदार्थ भंगेन कृताण बारं, प्रकीर्त्य ते संप्रति वर्त्म तस्य।।७।।

कलश का तात्पर्य यह है कि – इस शास्त्र के प्रथम श्रुत स्कन्ध में द्रव्य स्वरूप के प्रतिपादन द्वारा बुधपुरुषों ने शुद्धतत्त्व का उपदेश दिया गया है।

अब नवपदार्थ रूप भेद द्वारा प्रारम्भ करके शुद्धात्मतत्त्व का वर्णन किया जाता है।

इस द्वितीय श्रुत स्कन्ध में आचार्य कुन्दकुन्द गाथा सूत्र द्वारा मंगलाचरण तथा प्रतिज्ञावाक्य कहते हैं। मूल गाथा इसप्रकार है –

अभिवंदिऊण सिरसा अपुणब्भवकारणं महावीरं।
तेसिं पयत्थभंगं मग्गं मोक्खस्स वोच्छामि।।१०५।।

(हरिगीत)

मुक्तिपद के हेतु से शिरसा नमू महावीर को।
पदार्थ के व्याख्यान से प्रस्तुत करूँ शिवमार्ग को।।१०५।।

जो अपुनर्भव के कारण हैं अर्थात् जिनके उपदेश को सुनकर भेदविज्ञान द्वारा मोक्ष प्राप्त होता है उन महावीर स्वामी को शिर नवाकर वन्दन करके उनके द्वारा कहे गये काल सहित पंचास्तिकाय का कथन करके अब नवपदार्थों का भेदरूप मोक्ष का मार्ग कहूँगा।

यहाँ आचार्य अमृतचन्द्र आप्त की स्तुति पूर्वक प्रतिज्ञावाक्य में कहते हैं कि यहाँ प्रवर्तमान धर्मतीर्थ के मूलकर्त्ता, भगवान वर्द्धमान स्वामी की भावस्तुति करके छहद्रव्यों का नवपदार्थों के रूप में तथा मोक्षमार्ग कहने की प्रतिज्ञा की गई है। कवि हीरानन्दजी कहते हैं –

दोहा)

महावीर कौं नमन करि कहौं पदारथ भंग।
मोख सुगम मारग लसै, अपुनर्भव परसंग ।।२ ।।

(सवैया इकतीसा)

वर्तमान धर्मतीर्थ ताका करतार कहा,
वर्द्धमान स्वामी ताकौं सिरसा नमन है।
ऐसी भावथुति सिद्धगति का निमित्त जानि,
हियै उपादेय मानि सुद्धता रमन है ।।
तातैं जे पदारथ हैं मोख पंथ हेतु कहे,
तिनहीं कौ जानवै का उद्यम गमन है।
ऐसी मुनिराज चाल आप काज विषै लसै,
ताकि सुद्ध भावन तैं मोह का वमन है।।३ ।।

गुरुदेव श्रीकानजीस्वामी कहते हैं कि कुन्दकुन्दाचार्य मोक्ष के कारण भूत वर्द्धमान तीर्थंकर भगवान को मस्तक झुकाकर नमस्कार करके मोक्ष के कारणभूत छहद्रव्यों के नवपदार्थों के भेदों का कथन की प्रतिज्ञा करते हैं।

'भव के अभाव का कारण तो आत्मा का स्वभाव है' – जिसको ऐसी रुचि है, उसे भगवान निमित्त होते हैं। इसी कारण यहाँ पहले भगवान की स्तुति करते हैं।

आगे कहते हैं कि जिस भाव से भव (संसार) मिले, वह भाव आकुलता है। उस आकुलता से रहित अकेला ज्ञायक भाव जिसके रह गया तथा जिसने पूर्ण दशा (मुक्ति) प्राप्त करली है तथा जिसके ज्ञान में तीनों लोकों को जाना है – ऐसे सर्वज्ञ देव अपुनर्भव के कारण हैं।

इसप्रकार मोक्ष के कारणभूत वर्धमान भगवान को नमन करके छह द्रव्यों एवं नव पदार्थ का वर्णन करेंगे। ●

पत्र वाचन में द्वितीय स्थान

अजमेर (राज.) : यहाँ माध्यमिक शिक्षा बोर्ड राजस्थान द्वारा दिनांक 24 अगस्त को आयोजित राज्य स्तरीय शिक्षकों की पत्रवाचना प्रतियोगिता में श्री टोडरमल दिगम्बर जैन सिद्धांत महाविद्यालय के स्नातक पण्डित रितेशजी शास्त्री डडूका ने द्वितीय स्थान प्राप्त किया। माध्यमिक शिक्षा बोर्ड के अध्यक्ष डॉ. सुभाषजी गर्ग, रीजनल कॉलेज अजमेर के प्रोफेसर श्री के. बी. रथ एवं निदेशक शैक्षिक नीरजा गुप्ता ने रितेश जैन को प्रशस्ति–पत्र एवं नकद राशि प्रदान कर सम्मानित किया।

ज्ञातव्य है कि शिक्षक दिवस के अवसर पर दिनांक 5 सितम्बर को लायन्स क्लब बांसवाड़ा द्वारा लायन्स भवन में भी श्री रितेश जैन को माल्यार्पण करके, श्रीफल भेंटकर, प्रशस्तिपत्र प्रदानकर एवं शॉल ओढाकर सम्मानित किया गया।

डॉ. भारिल्ल के आगामी कार्यक्रम

21 व 22 अक्टूबर	मंगलायतन–अलीगढ	सोगानीजी की जन्मशती
23 से 27 अक्टूबर	देवलाली	दीपावली
6 से 10 दिसम्बर	दाहोद (गुज.)	पंचकल्याणक
20 से 24 जनवरी 2012	राघौगढ (म.प्र.)	पंचकल्याणक

दशलक्षण महापर्व संपन्न

1. लंदन : यहाँ दशलक्षण महापर्व के अवसर पर प्रात: दशलक्षण विधान के उपरांत पण्डित वीरेन्द्रकुमारजी आगरा द्वारा प्रात: समयसार पर एवं रात्रि में दशलक्षण धर्म और मोक्षमार्गप्रकाशक पर प्रवचन हुये। विशेष उपलब्धि के रूप में यहाँ प्रत्येक शनिवार व रविवार को युवाओं के लिए अंग्रेजी में कक्षाओं का आयोजन किया गया।

2. मुम्बई –मलाड (एवरशाइन नगर) : यहाँ दशलक्षण पर्व के अवसर पर डॉ. महावीरप्रसादजी शास्त्री उदयपुर द्वारा प्रात: समयसार पर एवं सायंकाल रत्नकरण्ड श्रावकाचार पर प्रवचन हुये। दोपहर में भक्तामर स्तोत्र पर कक्षा ली गई। प्रात: पण्डित अभिनवजी शास्त्री जबलपुर द्वारा विधान तथा दोपहर में कक्षा ली गई। इसके अतिरिक्त पण्डित सुदीपजी शास्त्री द्वारा भी कक्षायें ली गई तथा रात्रि में सांस्कृतिक कार्यक्रम कराये गये।

3. शाजापुर (म.प्र.) : यहाँ दशलक्षण महापर्व के अवसर पर प्रात: दशलक्षण विधान के अतिरिक्त पण्डित मुरारीलालजी जैन नरवर द्वारा प्रात: मोक्षमार्ग प्रकाशक, दोपहर में जैन सिद्धांत प्रवेशिका प्रशिक्षण एवं रात्रि में रत्नकरण्ड श्रावकाचार पर प्रवचन हुये।

4. सांगली (महा.) : यहाँ नेमीनाथनगर में दशलक्षण महापर्व के अवसर पर पण्डित प्रसन्नजी शेटे शास्त्री द्वारा दशलक्षण धर्म पर प्रवचन हुये। इनके अतिरिक्त स्थानीय विद्वान पण्डित नितिनजी कोठेकर शास्त्री के व्याख्यान का भी लाभ मिला, जिनके द्वारा भोसे, जैनापुर, जयसिंगपुर, शिरटी, आष्टा आदि स्थानों पर भी व्याख्यान हुये। स्थानीय विदुषी डॉ. स्वयंप्रभा पाटील शास्त्री द्वारा भी प्रतिदिन प्रात: प्रवचन हुआ।

इस अवसर पर श्रोताओं के विशेष आग्रह पर 'नय वाचना सप्ताह' नामक गोष्ठी का भी आयोजन किया गया। कार्यक्रम में दत्तनगर, लक्ष्मी नगर, बालाजी नगर, जयसिंगपुर इत्यादि स्थानों से लगभग 200 लोगों ने धर्मलाभ लिया।

सभी कार्यक्रम पण्डित महावीरजी पाटील शास्त्री के निर्देशन में संपन्न हुये।

5. प्रतापगढ (राज.) : यहाँ मुमुक्षु मण्डल में दशलक्षण महापर्व के अवसर पर पण्डित सुनीलजी नाके निम्बाहेड़ा द्वारा एवं स्थानीय विद्वान पण्डित सुनीलजी जैन मामा द्वारा प्रवचनों एवं स्वाध्याय का लाभ मिला। प्रात: मोक्षमार्गप्रकाशक एवं रात्रि में दशलक्षण धर्म पर प्रवचन हुये।

विशेष उपलब्धि के रूप में यहाँ पण्डित सुनीलजी नाके के **9 वर्षीय** होनहार सुपुत्र अक्षय जैन (छोटे पण्डितजी) द्वारा भी प्रवचन किया गया, उसकी रिकॉर्डिंग, प्रेस इन्टरव्यू एवं टी.वी. पर सीधा प्रसारण भी हुआ। यह बालक अतिशय बुद्धिमान है, इसे जैनागम के लगभग 10 हजार प्रश्नोत्तर याद हैं तथा इसमें लम्बे समय तक प्रवचन करने की क्षमता है।

नवीन शाखा का गठन

उदयपुर (राज.) : यहाँ नेमिनाथ जैन कॉलोनी सेक्टर–3 में पण्डित महावीरप्रसादजी शास्त्री उदयपुर द्वारा अखिल भारतीय जैन युवा फैडरेशन का गठन किया गया। फैडरेशन के **अध्यक्ष** श्री भूपेन्द्रजी मेहता, **उपाध्यक्ष** श्री दिनेशजी अखावत, **संरक्षक** श्री सुरेशजी अखावत, श्री दिनेशजी ठाकुरिया, **मंत्री** श्री पवनजी अखावत, **कोषाध्यक्ष** श्री पंकजजी सिंघवी, **प्रचार–प्रसार मंत्री** श्री मयंकजी सिंघवी, **सांस्कृतिक मंत्री** श्री चेतन कंठानिया, **संगठन मंत्री** श्री नरेन्द्रजी रटोडिया चुने गये। शाखा में कुल 50 सदस्य बने हैं।

जयपुर पंचकल्याणक में बनने वाले –

पात्रों का अभिनन्दन

जयपुर (राज.) : श्री टोडरमल स्मारक भवन में 21 से 27 फरवरी 2012 तक होने वाले श्री 1008 आदिनाथ दि. जिनबिम्ब पंचकल्याणक प्रतिष्ठा महोत्सव के प्रमुख पात्रों, प्रतिमा विराजमानकर्त्ता, भेंटकर्त्ता, चरणचिह्न विराजमानकर्त्ता, प्रमुख सहयोगकर्त्ता आदि महानुभावों का अभिनन्दन समारोह दिनांक 6 अक्टूबर को शिक्षण शिविर के अवसर पर सम्पन्न हुआ।

इस समारोह की सभा के अध्यक्ष श्री महेन्द्रकुमारजी चौधरी भोपाल थे। मुख्य अतिथि के रूप में श्री विवेककुमारजी काला जयपुर एवं विशिष्ट अतिथि के रूप में श्री महेन्द्रकुमारजी पाटनी जयपुर, डॉ. हुकमचंदजी भारिल्ल, पण्डित रतनचंदजी भारिल्ल, श्री प्रदीपजी चौधरी किशनगढ, श्री मुकेशजी इन्दौर, श्री सुशीलकुमारजी गोदीका जयपुर, पण्डित वीरेन्द्रजी आगरा, पण्डित अभयजी शास्त्री देवलाली, श्री जितेन्द्रजी जैन जयपुर, श्री अजितकुमारजी बड़ौदा, श्री राजेन्द्रजी गोधा जयपुर, श्री राजकुमारजी काला जयपुर, श्री बालचंदजी पाटनी कलकत्ता, आदि महानुभाव मंचासीन थे।

श्री परमात्मप्रकाशजी भारिल्ल ने पंचकल्याणक की रूपरेखा का विस्तृत परिचय सभा को दिया।

81 इंच की अवगाहना वाले भगवान बाहुबलि के विराजमानकर्त्ता श्री अजितकुमारजी जैन परिवार बड़ौदा का तिलक लगाकर, माल्यार्पण कर, शॉल ओढाकर, श्रीफल एवं अभिनन्दन पत्र भेंटकर स्वागत किया गया। तदुपरान्त महोत्सव के कुबेर इन्द्र श्री मुकेशजी जैन इन्दौर; सनत इन्द्र परिवार से श्री प्रदीप–कुसुमजी चौधरी किशनगढ; आनत इन्द्र परिवार से श्री दिलीपभाई कमलाक्षी शाह मुम्बई; प्रतीन्द्रों में श्री सुरेश–शशि जैन शिवपुरी, श्री आशीष–स्वानुभूति जैन मुम्बई, श्री प्रेमचंद–राजेश गुरहा रायपुर; राजाओं में श्री के.एल.जैन जयपुर के अलावा चरण चिह्न विराजमानकर्त्ता श्री पूनमचंदजी छाबड़ा इन्दौर, श्रीमती रेणु सुरेश पाटनी कलकत्ता, श्री नरेशजी पाटोदी कोलकाता, श्री हंसा प्रकाशचंद सेठिया सरदारशहर, श्री महेन्द्रकुमारजी चौधरी भोपाल, श्री राजकुमारजी जैन पुट्ठा मिल भोपाल, श्री मगनलाल राजेन्द्रकुमारजी जैन भोपाल, श्री अनीश मांगीलालजी जैन नरसिंहपुरा इन्दौर, श्री सुभाषजी जैन नांगलोई, तीन शिखर पर कलशारोहणकर्त्ता श्री अजितकुमार शशि तोतुका जयपुर के अतिरिक्त प्रतिष्ठा महोत्सव में प्रमुख सहयोगी श्री जिनेन्द्रजी जैन दिल्ली इत्यादि सभी का तिलक लगाकर, माल्यार्पण कर, शॉल ओढाकर, श्रीफल एवं अभिनन्दन पत्र भेंटकर स्वागत किया गया। ●

(पृष्ठ 1 का शेष...)

दि.जैन मुमुक्षु मण्डल कोलकाता, श्रीमती मुन्नीबाई ध.प. श्री राजकुमारजी सेठी वैशाली नगर जयपुर, श्रीमती अमृतबेन ध.प. स्व. श्री बेलजीलाल शाह मुम्बई, श्रीमती सुनीता ध.प. श्री प्रेमचंदजी बजाज एवं सुपुत्र तन्मय–ध्याता बजाज परिवार कोटा थे।

विधान के आमंत्रणकर्त्ता श्री दि.जैन मुमुक्षु मण्डल कोलकाता, श्री शान्तिलालजी चौधरी भीलवाड़ा, श्री अजितप्रसादजी जैन दिल्ली, श्री ताराचंदजी सोगानी जयपुर, श्रीमती कल्पना नरेन्द्रजी जैन जयपुर एवं श्री सुनीलकुमारजी जैन ग्वालियर थे। विधान के संपूर्ण कार्य पण्डित सोनूजी शास्त्री फिरोजाबाद के निर्देशन में महाविद्यालय के छात्रों के सहयोग द्वारा संपन्न हुये।

शिविर समापन समारोह में शिविर की रिपोर्ट प्रस्तुत करते हुये पण्डित शान्तिकुमारजी पाटील ने कहा कि शिविर में ३५ विद्वानों के माध्यम से लगभग ६४५ साधर्मियों ने प्रतिदिन १६ घंटे तक चलने वाले तत्त्वज्ञान के कार्यक्रमों का लाभ लिया। लगभग २८६०० घंटों के सी.डी./डी.वी.डी. प्रवचन तथा १५ हजार रुपयों का सत्साहित्य घर–घर पहुंचा। इस शिविर में लगभग ८३ स्नातकों की उपस्थिति उल्लेखनीय रही। ●

श्री टोडरमल स्मारक भवन में विराजमान होने वाली प्रतिमाओं का –

पाषाण शुद्धि कार्यक्रम संपन्न

श्री टोडरमल स्मारक भवन में विराजमान होने वाले 81 इंच की खड़गासन अवगाहना वाले पार्श्वनाथ एवं बाहुबलि भगवान तथा 51 इंच की खड़गासन अवगाहना वाले वासुपूज्य एवं नेमिनाथ भगवान के जिनबिम्ब जिस पाषाण से बनने वाले हैं, उनकी शुद्धि का कार्यक्रम भी प्रतिमाओं की अगवानी के साथ–साथ दिनांक 6 अक्टूबर को रखा गया।

इस अवसर पर बाहुबलि भगवान के जिनबिम्ब के पाषाण की शुद्धि बाहुबलि भगवान के विराजमानकर्त्ता श्री अजितभाई जैन बड़ौदा, पार्श्वनाथ भगवान के पाषाण की शुद्धि पार्श्वनाथ भगवान के विराजमानकर्त्ता श्री भगवानजी भाई परिवार लंदन की ओर से डॉ. हुकमचंदजी भारिल्ल व दिलीपभाई शाह ने की।

इसके अतिरिक्त नेमिनाथ भगवान के चार जिनबिम्बों के पाषाणों की शुद्धि श्री जितेन्द्रजी जैन जयपुर, वासुपूज्य के चार जिनबिम्बों के पाषाणों की शुद्धि श्री आनन्दकुमारजी पाटनी इन्दौर द्वारा की गई।

वीतराग–विज्ञान महिला मण्डल के सभी सदस्यों, ब्र. बहनों व समस्त शिविरार्थी साधर्मियों द्वारा भी पाषाण शुद्धि की गई।

इसी प्रसंग पर शिल्पकारों का सम्मान करते हुये उन्हें प्रतिमा निर्माण में शुद्धता रखने हेतु आवश्यक प्रतिज्ञायें दिलायी गयी।

कार्यक्रम का संचालन पण्डित अशोककुमारजी लुहाड़िया मंगलायतन एवं पण्डित संजयजी जैन मंगलायतन ने किया।

जयपुर पंचकल्याणक में बनने वाले –

भगवान के माता-पिता का स्वागत

श्री टोडरमल स्मारक भवन में 21 –27 फरवरी तक होने वाले पंचकल्याणक प्रतिष्ठा महोत्सव में विधिनायक भगवान आदिनाथ के माता–पिता श्री टोडरमल स्मारक भवन की स्वाध्याय सभा के नियमित श्रोता श्रीमती सुशीला–शान्तिलालजी अलवरवाले बनने जा रहे हैं।

दिनांक 7 अक्टूबर को जैसे ही इसकी घोषणा हुई तो पूरी सभा में एक उत्साह की लहर दौड़ गई। ट्रस्ट के अध्यक्ष श्री सुशीलकुमारजी गोदीका एवं महामंत्री डॉ. हुकमचंदजी भारिल्ल द्वारा उनका शॉल–श्रीफल द्वारा हार्दिक स्वागत किया गया। इसके बाद पूरी सभी ने माता–पिता एवं उनके पूरे परिवारजनों का हार्दिक अभिनन्दन किया।

ज्ञातव्य है कि इसी शिविर के दौरान इन्दौर निवासी श्री मुकेशजी (ढाईद्वीप) द्वारा कुबेर इन्द्र हेतु, श्री दिलीपभाई शाह द्वारा बेटी–जमाई श्रीमती ध्वनि–मेहुल शाह को इन्द्र हेतु एवं श्री नरेन्द्र–कल्पना बड़जात्या श्यामनगर जयपुर, गौरव–सौरभ शास्त्री इन्दौर, श्री दीपेश शाह जयपुर, श्री नरेश जैन श्योपुर, श्री पद्मचंद जैन कोटा, श्री मुकेश–राजेश जैन इन्दौर द्वारा राजा–रानी हेतु स्वीकृति प्राप्त हुई।

पंचकल्याणक सफल बनाने हेतु शास्त्री विद्वानों का अभूतपूर्व उत्साह

पण्डित टोडरमल स्मारक भवन में फरवरी माह में होने जा रहे पंचकल्याणक प्रतिष्ठा महोत्सव हेतु संपूर्ण मुमुक्षु समाज का उत्साह देखने को मिल रहा है। श्री टोडरमल दि. जैन सिद्धांत महाविद्यालय के भूतपूर्व स्नातक विद्वान भी इस महामहोत्सव को सफल बनाने के लिए तन–मन–धन से सक्रिय सहयोग प्रदान कर रहे हैं। पण्डित टोडरमल स्नातक परिषद की विशेष योजना में अब तक पंचकल्याणक प्रतिष्ठा फंड की विभिन्न मदों में 125 शास्त्री विद्वानों ने लगभग 12 लाख रुपये की राशि सहयोग स्वरूप प्रदान की है। इसका विवरण निम्नानुसार है –

1. विपिन शास्त्री नागपुर – 1 लाख 31 हजार रुपये,

2. सौरभ–गौरव शास्त्री इन्दौर – 1 लाख रुपये (राजा–रानी),

3. सौरभ शास्त्री फिरोजाबाद – 80 हजार रुपये,

4. अनुप्रेक्षा जैन मुम्बई – 41 हजार रुपये,

5. देवांग गाला मुम्बई – 36 हजार रुपये,

6. 31 हजार रुपये देने वाले महानुभाव – श्रेयांस शास्त्री जयपुर, विपिन शास्त्री मुम्बई (भूमिगोचरी राजा), अनेकान्त भारिल्ल मुम्बई एवं स्वानुभूति टडैया मुम्बई,

7. 25 हजार रुपये देने वाले महानुभाव – जिनेन्द्र शास्त्री उदयपुर, महावीरप्रसाद शास्त्री उदयपुर,

8. 21 हजार रुपये देने वाले महानुभाव – पीयूष शास्त्री जयपुर, सोनू शास्त्री बैंगलोर, संदीप शास्त्री गोहद, अविरल शास्त्री विदिशा, ललित शास्त्री बण्डा (लखनऊ), धर्मेन्द्र शास्त्री कोटा, अभय शास्त्री खैरागढ,

9. 11 हजार रुपये देने वाले महानुभाव – प्रमोद शास्त्री सागर, अभयकुमारजी देवलाली, राकेशकुमारजी नागपुर, श्रेयांस शास्त्री जबलपुर, सुदीप शास्त्री बरगी, समकित शास्त्री सिलवानी, मनीष शास्त्री रहली, अभिनव शास्त्री मैनपुरी, सौरभ शास्त्री खड़ैरी, वरूण शास्त्री मुम्बई, अरविन्द शास्त्री ग्वालियर, ऋषभ शास्त्री अहमदाबाद, जयेन्द्र जैन मुम्बई, अरविन्द शास्त्री ग्वालियर, ध्रुवेश शास्त्री अहमदाबाद, उदयमणि शास्त्री अहमदाबाद, अंकित शास्त्री लूणदा,

10. निलय–निपुण शास्त्री आगरा – 7100 रुपये

11. 5100 रुपये देने वाले महानुभाव – आशीष शास्त्री टीकमगढ, जागेश शास्त्री जबेरा, अनंत विश्वम्भर सेलू, अभिषेक जैन बण्डा, अमित शास्त्री बीना, पंकज शास्त्री बण्डा, विराग शास्त्री जबलपुर, राजकुमार जैन बरगी, अमोल संघई हिंगोली, अनिल धवल भोपाल, विवेक शास्त्री गौरझामर, नंदकिशोर शास्त्री काटोल, निखिल शास्त्री कोतमा, पंकज शास्त्री खड़ैरी, दीपक शास्त्री जबेरा, शुद्धातम शास्त्री मौ, दीपक शास्त्री जबेरा, नरेश शास्त्री पन्ना, अभिजीत शास्त्री जयपुर, विकास शास्त्री ग्वालियर, प्रभात जैन टीकमगढ, रूपेश शास्त्री मुम्बई, हितेश शास्त्री मुम्बई, जितेन्द्र राठी पुणे, निकलंक शास्त्री कोटा, मनीष शास्त्री कहान जयपुर, सुनील शास्त्री जयपुर, संतोष शास्त्री बकस्वाहा, प्रभात शास्त्री जयपुर, विवेक शास्त्री पिड़ावा, प्रमोद शास्त्री दौसा, अजित शास्त्री अलवर, राजकुमार शास्त्री बांसवाड़ा, शिखरचंद शास्त्री सागर, अध्यात्मप्रकाश जयपुर, विपुल शास्त्री सागर, सुरेश शास्त्री गुना, चेतन शास्त्री खड़ैरी, सन्मति शास्त्री पिड़ावा, रमेशचंद शास्त्री जयपुर, प्रमोद शास्त्री दिल्ली, जिनचंद शास्त्री हेरले, संजय शास्त्री दौसा, विनीत शास्त्री आगरा, राजीव शास्त्री भिण्ड थानागाजी, गणतंत्र शास्त्री आगरा, श्रेयांस शास्त्री अभाना, राजेश शास्त्री जयपुर, रवीन्द्र महाजन शास्त्री नागपुर, अशोक मांगुलकर राघौगढ, सुमित शास्त्री टीकमगढ, अमित शास्त्री गुना, संजीव शास्त्री खड़ैरी जयपुर, किशोर शास्त्री बैंगलोर।

इसके अतिरिक्त जिन शास्त्री विद्वानों को इस योजना में सहयोग करने का भाव हो, वे इस योजना के संयोजक श्री विराग शास्त्री से उनके मो. 9373294684 पर संपर्क कर सकते हैं।

पण्डित टोडरमल स्नातक परिषद का –

छठवाँ अधिवेशन संपन्न

जयपुर (राज.) : यहाँ श्री टोडरमल स्मारक भवन में 14वें आध्यात्मिक शिक्षण शिविर के अवसर पर दिनाँक 4 अक्टूबर को टोडरमल स्नातक परिषद् का 6वां अधिवेशन संपन्न हुआ।

अधिवेशन की अध्यक्षता परिषद् के अध्यक्ष पण्डित अभयकुमारजी शास्त्री देवलाली ने की। मुख्य अतिथि के रूप में श्री सुरेशचंदजी पाटनी कोलकाता एवं विशिष्ट अतिथि के रूप में डॉ. अरविन्दजी दोशी गोंडल, श्री शान्तिलालजी चौधरी भीलवाड़ा, श्री प्रकाशचंदजी गंभीरमलजी सेमारी अहमदाबाद के अतिरिक्त कार्यकारिणी सदस्य पण्डित राजकुमारजी शास्त्री बांसवाड़ा, डॉ. महावीरप्रसादजी शास्त्री टोकर एवं पण्डित विरागजी शास्त्री देवलाली मंचासीन थे।

श्री टोडरमल स्मारक भवन में 21 से 27 फरवरी 2012 को होने जा रहे पंचकल्याणक महोत्सव में स्नातक परिषद की भूमिका विषय पर केन्द्रित इस अधिवेशन में सर्वप्रथम श्री विरागजी शास्त्री देवलाली ने एक अभिनव योजना प्रस्तुत करते हुए कहा कि हमारी कर्मभूमि में होने वाले इस महोत्सव में सभी स्नातक सदस्य कम से कम 5100/– रुपये का योगदान करें एवं अपने कम से कम 5 मित्रों, परिचितों से भी योगदान दिलावें।

इस योजना का सभी ने करतल ध्वनि से स्वागत किया और लगभग 118 स्नातकों ने अपनी सहयोग राशि की स्वीकृति दी, जिसकी सूची पेज नं. 5 पर प्रकाशित की जा रही है।

इसके अतिरिक्त पण्डित परमात्मप्रकाशजी भारिल्ल मुम्बई एवं पण्डित वीरेन्द्रजी आगरा, पण्डित शिखरचंदजी शास्त्री सागर, पण्डित रमेशचंदजी शास्त्री जयपुर, पण्डित मनीषजी कहान खड़ैरी एवं पण्डित संतोषजी शास्त्री बकस्वाहा आदि सदस्यों ने भी अपने विचार व्यक्त किये।

स्नातक परिषद के अध्यक्ष पण्डित अभयकुमारजी शास्त्री देवलाली ने अध्यक्षीय उद्बोधन में कहा कि श्री टोडरमल स्मारक भवन में आगामी 21 से 27 फरवरी 2012 तक होने वाला पंचकल्याणक हमारी कर्मभूमि में होने वाला महोत्सव है और इसमें सहयोग के लिए स्नातक परिषद तन–मन–धन से तत्पर है।

अधिवेशन का संचालन परिषद के महामंत्री पण्डित पीयूषजी शास्त्री जयपुर ने एवं मंगलाचरण कु. श्रुति जैन ने किया।

मोक्षमार्ग प्रकाशक का सार

83 बाईसवाँ प्रवचन

– डॉ. हुकमचन्द भारिल्ल

(गतांक से आगे...)

इस पर भी यदि कोई यह कहे कि भले ही आप अध्यात्मशास्त्रों का स्वाध्याय करें; पर सबसे पहले तो इनको नहीं पढ़ना चाहिए। जब आपका जैनदर्शन का गहरा अध्ययन हो जावे, तब इन्हें पढ़ें।

उक्त संदर्भ में जैनदर्शन में स्वाध्याय करने का क्रम प्रस्तुत करते हुए पण्डित टोडरमलजी लिखते हैं –

''जिनमत में तो यह परिपाटी है कि पहले सम्यक्त्व होता है फिर व्रत होते हैं; वह सम्यक्त्व स्व-पर का श्रद्धान होने पर होता है और वह श्रद्धान द्रव्यानुयोग का अभ्यास करने पर होता है; इसलिए प्रथम द्रव्यानुयोग के अनुसार श्रद्धान करके सम्यग्दृष्टि हो, पश्चात् चरणानुयोग के अनुसार व्रतादिक धारण करके व्रती हो – इसप्रकार मुख्यरूप से तो निचली दशा में ही द्रव्यानुयोग कार्यकारी है; गौणरूप से जिसे मोक्षमार्ग की प्राप्ति होती न जाने, उसे पहले किसी व्रतादिक का उपदेश देते हैं; इसलिए ऊँची दशावालों को अध्यात्म-अभ्यास योग्य है, ऐसा जानकर निचली दशावालों को वहाँ से पराङ्मुख होना योग्य नहीं है।[१]''

समयसारादि अध्यात्मग्रंथों में उस भगवान आत्मा का स्वरूप समझाया गया है, जिसके दर्शन का नाम सम्यग्दर्शन है, जिसके जानने का नाम सम्यग्ज्ञान और जिसमें जमने-रमने का नाम सम्यक्चारित्र है। **अत: जिन्हें सम्यग्दर्शन-ज्ञान-चारित्र की प्राप्ति करना है, उन्हें सबसे पहले उन्हीं ग्रंथों का स्वाध्याय करना चाहिए, जिनमें मिथ्यात्व अर्थात् मिथ्या-दर्शन, मिथ्याज्ञान और मिथ्याचारित्र के नाश का उपाय बताया गया हो।**

तत्त्वार्थश्रद्धान को सम्यग्दर्शन कहते हैं और तत्त्वार्थों का वर्णन द्रव्यानुयोग के शास्त्रों में होता है। छहढाला द्रव्यानुयोग अर्थात् अध्यात्म का ग्रन्थ है। क्या प्राथमिक भूमिकावालों को छहढाला का स्वाध्याय भी नहीं करना चाहिए?

पण्डित टोडरमलजी तो अत्यन्त स्पष्ट शब्दों में कह रहे हैं कि सबसे पहले द्रव्यानुयोग में प्रतिपादित तत्त्वार्थों का श्रद्धान कर सम्यग्दर्शन प्राप्त करना चाहिए। तदुपरान्त चरणानुयोगानुसार चारित्र धारण करना चाहिए।

उनका तो स्पष्ट आदेश है कि निचलीदशावालों को भी द्रव्यानुयोग में समाहित अध्यात्म के अध्ययन से विमुख नहीं होना चाहिए।

इस पर कुछ लोग कहते हैं कि ये ऊँची-ऊँची बातें निचली दशावालों की समझ में नहीं आतीं। ऐसे लोगों को थोड़ा डाँटते हुए पण्डित टोडरमलजी कहते हैं –

''और तो अनेक प्रकार की चतुराई जानें और यहाँ मूर्खपना प्रगट करें, वह योग्य नहीं है। अभ्यास करने से स्वरूप भली-भाँति भासित होता है, अपनी बुद्धि अनुसार थोड़ा-बहुत भासित हो; परन्तु सर्वथा निरुद्यमी होने का पोषण करें, वह तो जिनमार्ग का द्वेषी होना है।

तथा यदि कहोगे कि यह काल निकृष्ट है, इसलिए उत्कृष्ट अध्यात्म-उपदेश की मुख्यता नहीं करना।

तो उनसे कहते हैं – यह काल साक्षात् मोक्ष न होने की अपेक्षा निकृष्ट है, आत्मानुभवनादिक द्वारा सम्यक्त्वादिक होना इस काल में मना नहीं है; इसलिए आत्मानुभवनादिक के अर्थ द्रव्यानुयोग का अभ्यास अवश्य करना।[१]''

लौकिक कार्यों में तो जगत कठिन से कठिन विषय को समझने का पुरुषार्थ करता है; क्योंकि आर्थिकलाभ भी कठिन विषयों के विशेषज्ञों को अधिक प्राप्त होता है; परन्तु धर्म के प्रकरण में कठिन विषयों से बचना चाहता है। **इसका तो स्पष्टभाव यह है कि जैसी रुचि हमारी विषय-कषाय के पोषण में है, वैसी धर्म के संबंध में नहीं है। पण्डितजी तो अत्यन्त कठोर शब्दों में कह रहे हैं कि इसप्रकार की वृत्ति और प्रवृत्ति तो धर्म का द्वेषी होना है।**

जमाने को दोष देनेवालों को भी सावधान करते हुए पण्डितजी कह रहे हैं कि यह काल साक्षात् मुक्ति प्राप्त करने की अपेक्षा भले ही निकृष्ट है, पर आत्मानुभव कर सम्यग्दर्शनादि प्राप्त करने की अपेक्षा तो निकृष्ट नहीं है; क्योंकि इस काल में भी न केवल सम्यग्दर्शन व सम्यग्ज्ञान की प्राप्ति होती है, अपितु देशचारित्र और सकलचारित्र भी होता है।

इसलिए स्पष्ट आदेश देते हुए पण्डितजी कह रहे हैं कि आत्मानुभवादि के लिए द्रव्यानुयोग अर्थात् अध्यात्म का अभ्यास अवश्य करना।

यद्यपि द्रव्यानुयोग में न्याय ग्रंथ भी आते हैं, तथापि यहाँ भी मुख्यता अध्यात्म की ही है; क्योंकि लोग समयसारादि अध्यात्म ग्रन्थों के पढ़ने का ही निषेध करते दिखाई देते हैं। **न्याय ग्रंथों के पढ़ने का न तो किसी को विशेष आग्रह है और न कोई उनका निषेध ही करता है।** व्याकरण के साथ न्याय ग्रंथों के थोड़े-बहुत अध्ययन करने की चर्चा पहले की जा चुकी है।

आदिपुराण, उत्तरपुराण, पद्मपुराण आदि पुराणग्रंथ प्रथमानुयोग के ग्रंथ हैं; रत्नकरण्ड श्रावकाचार, पुरुषार्थसिद्ध्युपाय, अनगारधर्मामृत, सागार धर्मामृत आदि मुनि-श्रावकों के आचरण संबंधी ग्रंथ चरणानुयोग के ग्रंथ हैं; गोम्मटसार जीवकाण्ड, कर्मकाण्ड, त्रिलोकसार आदि ग्रंथ करणानुयोग के ग्रंथ हैं और तत्त्वार्थसूत्र, पंचास्तिकाय, द्रव्यसंग्रह आदि सिद्धान्त ग्रंथ, समयसारादि अध्यात्मग्रंथ एवं परीक्षामुख, न्याय दीपिका आदि न्याय ग्रंथ द्रव्यानुयोग के शास्त्र हैं।

१. मोक्षमार्गप्रकाशक, आठवाँ अधिकार, पृष्ठ २९३

१. मोक्षमार्गप्रकाशक, आठवाँ अधिकार, पृष्ठ २९३

यद्यपि उक्त बंटवारा जिनवाणी में प्राप्त होता है और विषयों को अनुयोगों में बाँटना भी संभव है, पर सभी ग्रन्थों को अनुयोगों में बांटना संभव नहीं है; क्योंकि **पुराणों में भी बीच-बीच में आत्मा-परमात्मा की चर्चा, कर्मों की चर्चा आती है और भूगोल की चर्चा भी यथास्थान आती ही है। इसीप्रकार अन्य ग्रंथों के बारे में कहा जा सकता है। यह संभव है कि किसी ग्रन्थ विशेष में एक अनुयोग का विषय हो; पर वर्तमान में प्राप्त अनेक ग्रन्थों में एक से अधिक अनुयोगों का विषय भी पाया जाता है।**

मोक्षमार्गप्रकाशक में अध्यात्म की चर्चा तो है ही, न्यायग्रंथों में आनेवाला परमतखण्डन और स्वमतमण्डन भी है। कर्मकाण्ड और जीवकाण्ड की विषयवस्तु भी उसमें प्राप्त होती है। आगे चलकर तो वे एक पूरा कर्माधिकार लिखनेवाले थे।

इसीप्रकार नाटक समयसार अध्यात्म का ग्रंथ है, पर उसमें गुणस्थानाधिकार भी प्राप्त होता है। गुणस्थानों की चर्चा में कौनसे गुणस्थान में कैसा आचरण होता है - इसकी चर्चा करके चरणानुयोग भी समाहित कर लिया गया है।

इसप्रकार हम कह सकते हैं कि सभी अनुयोग अपने-अपने विषय प्रतिपादन में महान हैं और एक-दूसरे के विषयों को समझने में सहायक भी हैं। अतः सभी का यथायोग्य स्वाध्याय अवश्य करना चाहिये।

अनुयोगों के अभ्यास क्रम के सम्बन्ध में पण्डितजी का मार्गदर्शन इसप्रकार है -

''पहले इसका अभ्यास करना, फिर इसका करना ऐसा नियम नहीं है, परन्तु अपने परिणामों की अवस्था देखकर, जिसके अभ्यास से अपनी धर्म में प्रवृत्ति हो, उसी का अभ्यास करना, अथवा कभी किसी शास्त्र का अभ्यास करे, कभी किसी शास्त्र का अभ्यास करे।

तथा जैसे - रोजनामचे में तो अनेक रकमें जहाँ-तहाँ लिखी हैं, उनकी खाते में ठीक खतौनी करे तो लेन-देन का निश्चय हो; उसीप्रकार शास्त्रों में तो अनेक प्रकार का उपदेश जहाँ-तहाँ दिया है, उसे सम्यग्ज्ञान में यथार्थ प्रयोजनसहित पहिचाने तो हित-अहित का निश्चय हो।[१]''

यहाँ पर तो पण्डित टोडरमलजी अत्यन्त स्पष्ट शब्दों में कह रहे हैं कि अनुयोगों के अध्ययन क्रम के सम्बन्ध में कुछ भी सुनिश्चित नियम नहीं है। अतः प्रत्येक साधर्मी भाई-बहिन का कर्तव्य है कि वह अपनी क्षमता और परिणामों की अवस्था के अनुसार अनुयोगों का क्रम इसप्रकार से सुनिश्चित करे कि जिससे उसकी प्रवृत्ति धर्म में बनी रहे।

ऐसा भी किया जा सकता है कि पलट-पलट कर कभी किसी अनुयोग का और कभी किसी अन्य अनुयोग का स्वाध्याय करे, परन्तु अनुयोगों की कथन पद्धति और अपने हित-अहित को ध्यान में रखकर ही उसका भाव ग्रहण करे।

१. मोक्षमार्गप्रकाशक, आठवाँ अधिकार, पृष्ठ ३०४

यहाँ एक प्रश्न संभव है कि पहले तो यह कह आये हैं कि पहले द्रव्यानुयोग के शास्त्रों का अध्ययन कर तत्त्वार्थों को समझकर सम्यग्दर्शन प्राप्त करना चाहिए; तदुपरान्त चरणानुयोगानुसार चारित्र धारण करना चाहिए; किन्तु अब यहाँ यह बताया जा रहा है कि अनुयोगों के अध्ययन का कोई सुनिश्चित क्रम जिनागम में नहीं है। उक्त दोनों कथनों में तो परस्पर विरोध स्पष्ट दिखाई दे रहा है। आखिर हम करें क्या ? कौन से आदेश का पालन करें ?

अरे, भाई ! वहाँ शिष्य बार-बार यही कह रहा था कि द्रव्यानुयोग में व्रतादि की हीनता दिखाई है; अत: उसका स्वाध्याय करना उचित नहीं है; क्योंकि ऐसे कथनों को पढ़कर तो लोग व्रतादि का पालन करना छोड़ देंगे। यदि पढ़ना ही है तो सब शास्त्रों का अध्ययन हो जाने के बाद सबसे अन्त में द्रव्यानुयोग पढ़ा जाना चाहिए।

उसके प्रश्न का उत्तर देते हुए कहा था कि **जिनमत में तो यह परिपाटी है कि पहले सम्यक्त्व होता है और फिर व्रत होते हैं। वह सम्यक्त्व स्व-पर के श्रद्धान होने पर होता है और वह श्रद्धान द्रव्यानुयोग के स्वाध्याय करने पर होता है; इसलिए पहले द्रव्यानुयोग के अनुसार सम्यग्दृष्टि हो, पश्चात् चरणानुयोग के अनुसार व्रतादि धारण कर व्रती हो।**

यह बात द्रव्यानुयोग का अध्ययन करने का निषेध करनेवाले एकान्ती को समझाई थी। वहाँ अनुयोगों का अध्ययन क्रम बताने की बात नहीं थी। वह कथन मतार्थ की अपेक्षा था और यहाँ अनुयोगों के क्रम के संबंध में बताया गया है कि शास्त्रों में इसप्रकार के किसी सुनिश्चित क्रम का कथन नहीं है।

उक्त दोनों कथन अपनी-अपनी अपेक्षा न केवल सत्य हैं, अपितु अत्यन्त उपयोगी भी हैं; क्योंकि यह सत्य है कि पाठकों को अध्ययन करने के लिए किसी सुनिश्चित क्रम में नहीं बांधा जा सकता है; किन्तु आत्महित की भावना से अत्यन्त उपयोगी ग्रन्थों के अध्ययन की सलाह तो दी ही जा सकती है। कोई नियम बनाना अलग बात है और सही सलाह देना अलग बात है। दोनों के अन्तर को समझा जाना चाहिए।

अभी यहाँ तो सभी अनुयोगों के शास्त्रों के अध्ययन करने की प्रेरणा दी जा रही है। शास्त्राभ्यास की महिमा बताते हुए पण्डित टोडरमलजी सम्यग्ज्ञानचन्द्रिका की पीठिका में लिखते हैं -

''हे भव्य जीवो! शास्त्राभ्यास के अनेक अंग हैं। **शब्द या अर्थ का वाँचना या सीखना, सिखाना, उपदेश देना, विचारना, सुनना, प्रश्न करना, समाधान जानना, बारम्बार चर्चा करना इत्यादि अनेक अंग हैं,** वहाँ जैसे बने तैसे अभ्यास करना। यदि सर्व शास्त्रों का अभ्यास न बने तो इस शास्त्र में सुगम व दुर्गम, अनेक अर्थों का निरूपण है; वहाँ जिसका बने, उसका ही अभ्यास करना; परन्तु अभ्यास में आलसी नहीं होना।

देखो! शास्त्राभ्यास की महिमा! जिसके होने पर जीव परम्परा

से आत्मानुभव दशा को प्राप्त होता है, जिससे मोक्षरूप फल प्राप्त होताहै। – यह तो दूर ही रहो, शास्त्राभ्यास से तत्काल ही इतने गुण प्रगटहोते हैं–

१. क्रोधादि कषायों की मंदता होती है।
२. पंचेन्द्रियों के विषयों में होनेवाली प्रवृत्ति रुकती है।
३. अति चंचल मन भी एकाग्र होता है।
४. हिंसादि पाँच पाप नहीं होते।
५. स्तोक (अल्प) ज्ञान होने पर भी त्रिलोक के तीन काल संबंधी चराचर पदार्थों का जानना होता है।
६. हेय-उपादेय की पहिचान होती है।
७. आत्मज्ञान सन्मुख होता है। (ज्ञान आत्मसन्मुख होता है।)
८. अधिक-अधिक ज्ञान होने पर आनन्द उत्पन्न होता है।
९. लोक में महिमा/यश विशेष होता है।
१०. सातिशय पुण्य का बंध होता है।

इतने गुण तो शास्त्राभ्यास करने से तत्काल ही प्रगट होते हैं, इसलिए शास्त्राभ्यास अवश्य करना।[१]''

उक्त कथन के माध्यम से पण्डित टोडरमलजी ने आध्यात्मिक लाभ के साथ-साथ लौकिक लाभ बताकर सभी को नियम से नित्य स्वाध्याय करने की प्रेरणा दी है; इसको ध्यान में रखकर हम सभी प्रतिदिन नियमित स्वाध्याय करने का संकल्प लें – इस मंगलभावना से विराम लेता हूँ। ●

१. गुणस्थान विवेचन, पृष्ठ २८

शोक समाचार

1. उदयपुर (राज.) निवासी ब्र. रोशनबेन का दिनांक 4 सितम्बर को शांतपरिणामोंपूर्वक देहावसान हो गया। आप अत्यंत स्वाध्यायी थीं। श्री टोडरमल स्मारक भवन द्वारा संचालित गतिविधियों में आपका निरंतर सक्रिय सहयोग रहता था।

2. ग्वालियर (म.प्र.) निवासी श्री सुमतप्रकाशजी जैन पुत्र श्री रघुवीरसिंहजी जैन का दिनांक 25 अगस्त को 86 वर्ष की आयु में शांतपरिणामोंपूर्वक देहावसान हो गया।

3. ग्वालियर (म.प्र.) निवासी श्री प्रकाशचंदजी जैन का दिनांक 30 अगस्त को ब्र.अभिनन्दनकुमारजी शास्त्री के सानिध्य में समाधिमरणपूर्वक देहावसान हो गया। आपकी स्मृति में जैनपथप्रदर्शक हेतु 251/- रुपये प्राप्त हुये।

4. बेगमगंज-रायसेन (म.प्र.) निवासी श्री महेन्द्रकुमारजी मुन्शी का दिनांक 11 सितम्बर को शांतपरिणामोंपूर्वक देहावसान हो गया। आपकी स्मृति में जैनपथप्रदर्शक हेतु 1100/- रुपये प्राप्त हुये।

दिवंगत आत्मायें चतुर्गति के दु:खों से छूटकर शीघ्र ही अभ्युदय को प्राप्त हों-यही मंगल भावना है।

श्री टोडरमल दि.जैन सिद्धांत महाविद्यालय का –

परीक्षा परिणाम घोषित

श्री टोडरमल दिगम्बर जैन सिद्धांत महाविद्यालय का वर्ष 2010 का परीक्षा परिणाम दिनांक 7 अक्टूबर को शिक्षण शिविर में घोषित किया गया, जो निम्नानुसार है-

उपाध्याय कनिष्ठ (11वीं) में प्रथम स्थान संदेश जैन मोकलपुर एवं द्वितीय स्थान नितिन जैन झालरापाटन ने प्राप्त किया।

उपाध्याय वरिष्ठ (12वीं) में प्रथम स्थान विवेक जैन अमरमऊ एवं द्वितीय स्थान निलय जैन बरायठा ने प्राप्त किया।

शास्त्री प्रथम वर्ष में प्रथम स्थान नवीन जैन उज्जैन एवं द्वितीय स्थान कु. नयना जैन खनियांधाना ने प्राप्त किया।

शास्त्री द्वितीय वर्ष में प्रथम स्थान कु. प्रतीति पाटील एवं द्वितीय स्थान अंकित जैन छिन्दवाड़ा ने प्राप्त किया।

शास्त्री तृतीय वर्ष में प्रथम स्थान अभिषेक जैन कोलारस एवं द्वितीय स्थान जयेश जैन उदयपुर व राहुल जैन नौगांव ने प्राप्त किया।

उपाध्याय वर्ग में प्रथम स्थान सौरभ जैन कोलारस (उपाध्याय कनिष्ठ) एवं द्वितीय स्थान कु. ईर्या जैन दिल्ली (उपाध्याय वरिष्ठ) व पवन जैन मुम्बई (उपाध्याय कनिष्ठ) ने प्राप्त किया। शास्त्री वर्ग में प्रथम स्थान कु. अनुभूति जैन गुना (शास्त्री प्रथम वर्ष) एवं द्वितीय स्थान अभिषेक जैन इन्दौर (शास्त्री प्रथम वर्ष) ने प्राप्त किया।

प्रवीणता सूची में स्थान पाने वाले सभी छात्रों को प्रमाणपत्र एवं नकद राशि देकर पुरस्कृत किया गया। पुरस्कार वितरण श्री प्रकाशचंदजी जैन अहमदाबाद के करकमलों से हुआ।

पूज्य गुरुदेवश्री कानजीस्वामी के समस्त ऑडियो – वीडियो प्रवचन साहित्य एवं अन्य अनेक जानकारियों के लिये अवश्य देखें–
वेबसाईट – www.vitragvani.com
संपर्क सूत्र–श्री कुन्दकुन्द कहान पारमार्थिक ट्रस्ट, मुम्बई
Ph. : 022-26130820, 26104912, E-Mail - info@vitragvani.com

प्रकाशन तिथि : 13 अक्टूबर 2011

प्रति,

सम्पादक : **पण्डित रतनचन्द भारिल्ल** शास्त्री, न्यायतीर्थ, साहित्यरत्न, एम.ए., बी.एड.
सह-सम्पादक : **पण्डित संजीवकुमार गोधा**, डबल एम.ए.(जैनविद्या व तुलनात्मक धर्मदर्शन; इतिहास), नेट, एम.फिल (जैन दर्शन)
प्रकाशक एवं मुद्रक : **ब्र. यशपाल जैन** द्वारा जैनपथप्रदर्शक समिति के लिए जयपुर प्रिण्टर्स प्रा.लि., जयपुर से मुद्रित तथा त्रिमूर्ति कम्प्यूटर्स, श्री टोडरमल स्मारक भवन, ए-४, बापूनगर, जयपुर से प्रकाशित।

यदि न पहुँचे तो निम्न पते पर भेजें –
ए- 4 बापूनगर, जयपुर - 302015 (राज.)
फोन : (0141) 2705581, 2707458
E-Mail : ptstjaipur@yahoo.com **फैक्स :** (0141) 2704127